International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-5 Sep - Oct – 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

हिन्दी पत्रकारिता में भारतीय राष्ट्रवाद के योगदान का संक्षिप्त विश्लेषण

डॉ अरविंदकुमार दीक्षित
प्राचार्य
श्री रामनारायण दीक्षित स्नातकोत्तर महाविद्यालय श्री विजयनगर
जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

सार–

भारत के इतिहास में 19वीं सदी सामाजिक आर्थिक संक्रमण का काल है, जिनमें से आधुनिक भारत का अभ्युदय हुआ। 19वीं सदी में भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना के विकास का प्रारंभ हुआ। राष्ट्रवाद के उदय में हिन्दी पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। पत्रकारिता जनसंचार का सशक्त माध्यम है, जो समाज को जागृत करके उसमें उत्साह एवं चेतना का निर्माण करते है। इससे मनुष्य जीवन की विविधताएँ तथा रोज घटने वाली घटनाओं से परिचित होते हैं। पत्रकारिता की शक्ति से समाज की कमियों, गलतियों और कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। पत्रकारिता लोगों को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक गतिविधियों का परिचय देकर उसमें जागृति लाते है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान लोगों को जागरूक करने में पत्रकारिता का योगदान महत्वपूर्ण रहा। प्रेस तथा पत्रकारिता के द्वारा राष्ट्रवाद को नया आयाम मिला।

प्रस्तावना–

पत्रकारिता समाज का प्रतिबिम्ब है जो समाज में हो रही घटनाओं का यथार्थ चित्रण प्रदर्शित करता है। भारतीय पत्रकारिता में हिन्दी पत्रकारिता भी यही कार्य बखूबी करती आ रही है। किन्तु पत्रकारिता का कार्य केवल समाज को आईना दिखाना ही नहीं है अपितु समाज में जन जागृति या जागरुकता लाने का महत्वपूर्ण कार्य भी है। पत्रकारिता का अतीत भारतीय पत्रकारिता से काफी पुरातन है। जब संसार का एक देश दुनिया पर राज करते हुए पत्रकारिता के क्षेत्र में सम्पूर्ण विकास की अवस्था में था उस समय भारत में हिन्दी पत्रकारिता नवजात शिशु की अवस्था में थी। इसी संदर्भ में यदि राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता की बात की जाए तो वह पत्रकारिता के गर्भ में पल रही थी। इस सबके बावजूद जब हिन्दी पत्रकारिता का सूर्य 'उदन्त मार्तण्ड' उदय हुआ तब राजस्थान में पत्रकारिता की शुरुआत भी नहीं हुई थी किन्तु राजपूताना अखबार के बाद से लेकर इतने वर्षों की यात्रा के बाद राजस्थान किसी भी प्रकार से पत्रकारिता में पीछे नहीं हैं। बल्कि वर्तमान में तो हिन्दी पत्रकारिता में कई कीर्तिमान भी स्थापित किए हैं। पत्रकारिता का उद्देश्य कोरी सूचना देना ही नहीं अपितु समाज को समय के साथ कदमताल करने हेतु तत्पर करना है। जो समाज में जनचेतना का विकास करने से ही सम्भव है। जिस समय हिन्दी पत्रकारिता का उदय हुआ उस समय समाज में राष्ट्रीय चेतना की आवश्यकता थी। समाज में देशप्रेम की भावना विकसित करने की आवश्यकता थी। देशकाल के आधार पर पत्रकारिता का उद्देश्य परिवर्तित होता रहता है। पत्रकारिता में भाषा परिवर्तन भी देशकाल के आधार पर होता है। स्वाधीनता आन्दोलन के समय जनचेतना का विकास राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना था। देशवासियों में जनचेतना का विकास समाज में प्रचलित भाषा के आधार पर तीव्रता से एवं अधिकाधिक लोगों मे हिन्दी भाषा के द्वारा ही सम्भव था। अतः हिन्दी पत्रकारिता एक आवश्यकता के रूप में अवतरित हुई और कालांतर में समाज के मध्य इसने अपनी स्थिति सुदृढ़

की। साहित्यिक हिन्दी से हुई शुरुआत वर्तमान में आम बोलचाल की भाषा पर आकर ठहरी। स्वतंत्रताकालीन भारतीय पत्रकारिता ने राष्ट्र के सामाजिक, राजनीतिक जीवनधारा को गहराई से प्रभावित कर बौद्धिक चेतना पैदा करने में प्रभावी भूमिका अदा की क्योकि उसने जनता से सीधे उसी के भाषा और उसी के मुहावरे में संवाद स्थापित किया। 19वीं सदी में राष्ट्र की आशाओं और आकांक्षाओं को वाणी देने वाले पत्र और पत्रकार ने जन–जन को राजनीति की दिशा दिखाई और संस्कृति के गौरव का स्मरण कराया, जिसके कारण उनमें राष्ट्रीय नवजागरण हुआ। भारत में मुद्रण कला यानि प्रेस की स्थापना पुर्तगालियों द्वारा किया गया। डॉ0 अवधेश कुमार का कहना है कि ''भारत में सन् 1556 में पुर्तगालियों के माध्यम से प्रेस का प्रयोग आरम्भ किया गया जिसे सर्वप्रथम गोवा में स्थापित किया गया। सन् 1557 में भारत में सर्वप्रथम 'ट्राक त्रिनिक्रिटामो' नामक पुस्तक प्रकाशित की गई।''[1] लेकिन भारत में पत्रकारिता विकसित करने का श्रेय अंग्रेजों को जाता है। अंग्रेजों ने बंबई (1672), मद्रास (1772) और कलकत्ता (1779) में प्रेस की शुरूआत की। पत्रकारिता के क्षेत्र में सर्वप्रथम जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 29 जनवरी, 1780 ई0 में 'हिक्कीज गजट' अथवा 'बंगाल गजट' प्रकाशित किया जो 'कलकत्ता जर्नल एडवर्टाइजर' के नाम से भी जाना जाता है। यह अंग्रेजी भाषा में एक साप्ताहिक पत्र था। ओ.पी. शर्मा भारतीय पत्रकारिता के विकास के इतिहास पर लिखते हैं कि ''18वीं शती के अंतिम चरण में इस देश के तीन प्रांत अर्थात बंगाल, मद्रास और बंबई में अंग्रेजी भाषा में साप्ताहिक और मासिक पत्र निकलने लगे थे। अब तक दैनिकों का युग नहीं आया था और न भारतीय भाषाओं में कोई पत्र प्रकाशित होता था।''[2]

1818 ई0 में बंगला भाषा में भारतीय भाषा का प्रथम नियतकालीन पत्र 'दिग्दर्शन' जे0सी0 मार्शमैन के नेतृत्व में प्रकाशित हुआ। यह मासिक समाचार पत्र था। बंगला और अंग्रेजी के अतिरिक्त इसके हिन्दी के भी तीन अंक प्रकाशित हुए थे। आगे चलकर यह 'समाचार दर्पण' नाम से बंगला और अंग्रेजी भाषा में सप्ताह में दो बार छपने लगा। इसी समय भारतीय समाज सुधारकों ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना योगदान निभाया। राजा राममोहन राय ने 1816 ई0 में 'बंगाल गजट' 1821 ई0 में 'संवाद कौमुदी', 1825 ई0 में मिरातउल अखबार प्रकाशित किए। 'बंगाल गजट' भारत का प्रथम समाचार पत्र था, जिसके संपादक गंगाधर भट्टाचार्य थे। 'बंगाल गजट' अंग्रेजी भाषा का समाचार पत्र था।

हिन्दी पत्रकारिता का प्रारंभ 30 मई 1826 को कलकत्ता से प्रकाशित 'उदंत्त मार्तण्ड' के साथ हुआ। 'उंदत मार्तड' के संपादक पंडित जुगलकिशोर शुक्ल थे। यह साप्ताहिक पत्र था। यद्यपि कुछ विद्वानों ने 1818 ई0 में प्रकाशित 'दिग्दर्शन' पत्रिका को हिन्दी का समाचार पत्र माना है। किन्तु डॉ0 लक्ष्मीशंकर व्यास ने इसका खंडन करते हुए लिखा है – ''दिग्दर्शन नामक मासिक पत्रिका को हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र कहना इसलिए नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यह स्वतत्रं रूप से हिन्दी भाषा में नहीं निकाला गया। अप्रैल 1818 ई0 में बंगला 'दिग्दर्शन' पत्रिका का उल्लेख मिलता है। बाद में 1819 में इसका अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित होने की सूचना मिलती है। इसके बाद 'दिग्दर्शन' का हिन्दी संस्करण तैयार हुआ। इसके अंक भी अभी अप्राप्त है। इसका उल्लेख अभी रिपोर्ट में है।''[3]

अतः 'उदन्त मार्तड' को हिन्दी का पहला समाचार पत्र माना जाता है। लगभग डेढ़ वर्ष निकलने के पश्चात् सरकारी दिक्कतों और आर्थिक कठिनाईयों के कारण 'उदन्त मार्तण्ड' बंद हो गया। राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक विकास के परिणामस्वरूप जो राष्ट्रवाद उदित हुआ, उसे पत्रकार, बुद्धिजीवी, राष्ट्रवादी

लोग विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में अंग्रेजी शासन के दमन और पोषण के विरूद्ध लिखते रहे और जनता को जागरूक करके नवोत्थान के लिए मार्ग प्रशस्त किया। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के पत्रकार अपनी राष्ट्रवादी भावनाओं और विचारों के लिए प्रख्यात रहे है। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान हिन्दी साहित्य और हिन्दी पत्रकारिता साथ–साथ चलने लगे। तत्कालीन परिस्थिति में रचनाकार एक साथ साहित्यकार और पत्रकार दोनों हुआ करते थे। पत्रकारिता के संबंध में कहा गया है कि वह शीघ्रता में लिखा गया साहित्य है और साहित्य प्रतीक, बिम्ब और अप्रस्तुत कथन के द्वारा अपना प्रतिपाद्य अभिव्यक्त करता है।

साहित्य को समझने वाले लोगों का एक खास वर्ग होता है, किन्तु पत्रकारिता जनता की भाषा में जनता की बात करती है। संभवतः यहीं कारण है कि स्वतत्रं ता अवधि के सभी रचनाकारों ने अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में साहित्य और पत्रकारिता दोनों को चुना। जिस प्रकार देश के स्वाधीनता–संग्राम में राष्ट्रनायकों का अप्रतिम योगदान रहा, उसी प्रकार पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को जगाया गया। राष्ट्रीयता की वह धारा जिसका विकास राजनीति के माध्यम से हो रहा था पत्रकारिता की शक्ति से संपन्न थी। 1826 ई0 में 'उदंत मार्तड' के प्रकाशन से लेकर 1873 ई0 में भारतेन्दु के 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' तक को हिन्दी पत्रकारिता का प्रथम चरण कहा जा सकता हैं। 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' एक वर्ष बाद 'हरिश्चन्द्र पत्रिका' नाम से प्रसिद्ध हुआ। वैसे भारतेन्दु का 'कविवचन सुधा' पत्र 1867 ई0 में ही प्रकाशित हुआ था; परंतु नई भाषा शैली का प्रवर्तन 1873 ई0 में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' से ही हुआ। इस बीच के अधिकांश पत्र प्रयोग मात्र कहे जा सकते है। प्रारंभिक काल के हिन्दी पत्र निम्नांकित रहे हैं– जुगलकिशोर शुक्ल का 'उदंत मार्तण्ड' (1826), नील रतन हालदार का 'बंगदूत' (1829), राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द का 'बनारस अखबार' (1845), प्रेमनारायण का 'मालवा अखबार' (1848), तारामोहन मित्र का 'सुधाकर' (1850), मुंशी सदा सुखलाल का 'बुद्धि प्रकाश' (1852), मुंशी लक्ष्मण दास का 'ग्वालियर गजट' (1853), श्यामसुंदर का 'समाचार सुधावर्षण' (1854) राजा लक्ष्मण सिंह का 'प्रजाहितैषी' (1855), बाबू श्रीलाल का 'जियाजी प्रताप' (1855), शिवनारायण का 'सर्वहितकारक' (1855), ग्रंथसभा का 'बुद्धिवर्धक ग्रंथ'(1856), कन्हैयालाल का 'राजपूताना अखबार' (1857), अजी मुल्ला का 'पयामें आजादी' (1857), नवीनचन्द्र राय का 'ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका' (1866), तत्वबोधिनी पत्रिका (1865) आदि। ये पत्र राष्ट्रीयता की भावना से भरी हुई थीं। इन पत्रों में समाजसुधार, राष्ट्रीयता, क्रांति की भावना एवं विदेशी शासन के विरूद्ध बगावत का स्वर है।

1873 से 1900 तक का युग भारतेन्दु का युग था। भारतेन्दु युग का नामकरण हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाम पर किया गया है। इस युग के एक छोर पर भारतेन्दु का 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' था तो दूसरी छोर पर नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा अनुमोदन प्राप्त 'सरस्वती पत्रिका'। इन सताइस वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता के विकास में पर्याप्त तेजी आयीं इन वर्षों में प्रकाशित पत्रों की संख्या 300–350 से ऊपर है। ''यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारतेन्दु काल तक हिन्दी पत्रकारिता के साढ़े तीन सौ से अधिक अखबार विकसित हो गए थे, जिनमें से अधिसंख्य लोगों में राष्ट्रीय भावना पैदा करने, देश के लिए मर मिटने तथा स्वाधीनता के लिए तैयारी कर रहे थे।''[4]

अंग्रेजी साहित्य और संस्कृति के संपर्क में आने के कारण भारतेंदु हरिश्चन्द्र के समय भारतीय सांस्कृतिक जीवन और साहित्य में नवीन अध्यायों की निर्मिति हुई। भारतीय साहित्य रूढ़िवादिता, नियमबद्धता और सामंतवादिता

के बंधनों को तोड़कर समाज के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन की प्रत्येक गतिविधियों में उन्मुक्त साँस लने लगा। इस युग के पत्रकारिता के उद्देश्य बहुआयामी थे। एक ओर राष्ट्रीयता की चेतना के साथ–साथ अंग्रेजी सरकार का पर्दाफाश करना तो दूसरी ओर सामाजिक चेतना को जागृत करना एवं सामाजिक–धार्मिक कुरीतियों का उन्मूलन करना पत्रकारों के प्रमुख उद्देश्य थे।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेन्दु का अभूतपूर्व देन है। उन्होनें जहाँ एक ओर साहित्य की नवीन विधाओं को विकसित किया, वहीं हिन्दी पत्रकारिता को भी नई दिशा प्रदान की। भारतेन्दु काल में अनेक हिन्दी की पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई, जिनसे भारतेन्दु किसी न किसी रूप में अवश्य संबद्ध रहे। इसलिए भारतेन्दु को पत्रकारिता के क्षेत्र में 'नवजागरण का अग्रदूत' कहा जाता है।

''हिन्दी पत्रकारिता में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का वस्तुतः वही स्थान है जो बंगाल की पत्रकारिता में राजा राम मोहन राय का।''[5]

हिन्दी साहित्य कोश भाग–2 में भारतेन्दु के बारे में लिखा है –''भारतेन्दु हरिश्चन्द्र नवयुग के 'अग्रदतू ' और हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के जन्मदाता थे। उनकी रचनाएँ देश प्रेम से ओतप्रोत है।'' हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, मराठी, बंगाली, अंग्रेजी और उर्दू भाषा से परिचित होकर भारतेन्दु ने अपने विचारों का पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से सामान्य जनता तक प्रचार किया।

'कविवचन सुधा (1867), 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' (1875) तथा 'बालबोधिनी' उनकी प्रसिद्ध पत्रिकाएँ हैं। 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन हिन्दी पत्रकारिता को एक नया आयाम दिया। 'बाल बोधिनी' नामक पत्रिका 1874 में प्रकाशित हुई। हिन्दी में छपने वाली नारी समाज की पहली मासिक पत्रिका थी। ''भारतेन्दु ने पत्रकारिता के माध्यम से साहित्य की अनके नवीन विधाओं को विकसित कर उनके माध्यम से स्वतंत्रता की भावना को विकसित किया। उनके पत्रों से राष्ट्रीय विचारधारा प्रस्फुटित हुई।''[6]

भारतेन्दु के पत्रों के अतिरिक्त पं0 बालकृष्ण भट्ट का 'हिन्दी प्रदीप', पं0 प्रताप नारायण मिश्र का 'ब्राम्हण', प्रेमधन का 'आनंद कादंबिनी और 'नागरी नीरद', पं0 गौरी दत्त का 'देवनागरी प्रचारक', ठाकुर हनुमंत सिंह का 'राजपूत', रूद्रदत्त शर्मा द्वारा संपादित 'भारत मित्र' बालमुकुन्द गुप्त का 'हिन्दी बंगवासी, श्री तोताराम जी का 'भारत बन्धु, गोपाल राम गहवरी का 'भारत भूषण', पंडित मोहनलाल द्वारा संपादित 'मोहन चंद्रिका' आदि इस युग के प्रमुख पत्रिकाएँ एवं पत्रकार थे। इनमें से अधिकांश संपादक एवं लेखक भारतेन्दु मण्डल के थे। इन सभी का मूल उद्देश्य स्वदेशप्रेम, भाषा एवं संस्कृति के प्रति अनन्य श्रद्धा, राष्ट्रप्रेम, हिन्दी भाषा का प्रचार आदि था।

भारतेन्दुकालीन पत्र–पत्रिकाओं में साहित्य को समुचित स्थान प्रदान करने के साथ–साथ राष्ट्रीयता और समाज सुधार जैसी भावनाओं को महत्व दिया गया। इस काल में पत्रों के संपादक या संस्थापक सभी साहित्यकार थे, जिनका उद्देश्य साहित्य सेवा तो था ही, वहीं देश की समस्याओं को उजागर करना भी उनका लक्ष्य था। इस युग की पत्रकारिता में क्रांति, परिवर्तन और सुधार का स्वर सुनाई पड़ता है।

1900 ई0 से 1920 ई0 तक का युग द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है। बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशक के पथ–प्रदर्शक, विचारक और साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर ही इस काल का नाम 'द्विवेदी युग' पड़ा। 1900 में प्रकाशित 'सरस्वती' के माध्यम से पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्यिक पत्रकारिता की परंपरा को समृद्ध और परिष्कृत किया। 'सरस्वती' पत्रिका में देशप्रेमविषयक कविता का प्रकाशन अनवरत

जारी रहा। पं0 महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'जन्मभूमि; भारतभूमि' 'आर्यभूमि' 'प्यारा वतन', गोपाल शरण सिंह की 'मातृभूमि' रूपनारायण पांडेय की 'मातृभूमि, लक्ष्मण सिंह की 'जन्मभूमि पूजन, रामनरेश त्रिपाठी की 'जन्मभूमि भारत', रामचरित उपाध्याय की 'भव्यभारत' आदि देश–प्रेम से ओत–प्रोत कविताएँ 'सरस्वती' में लगातार प्रकाशित होती रही। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सन् 1903 से 1918 ई0 तक लगातार 'सरस्वती' का संपादन कर हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता को नया आयाम दिया। यही कारण है कि पत्रकारिता के इस कालावधि को साहित्यिक पत्रकारिता का युग अथवा द्विवेदी युग कहा जाता है। आचार्य नंददुलारे बाजपेयी लिखते है–''द्विवेदी जी के सरस्वती संपादन का इतिहास ऐसे अनेक आंदोलनों का इतिहास है जो उनके व्यक्तित्व और तत्कालीन समाज के विकास का इतिहास भी कहा जा सकता है।''[7]

इस युग की पत्रकारिता को न केवल द्विवेदी बल्कि लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी ने भी प्रभावित किया। द्विवेदीकालीन प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ निम्नांकित है– पं0 चंद्रधर शर्मा गुलेरी के संपादकत्व में जयपुर से 'समालोचक' पत्रिका, शांतिनारायाण का 'स्वराज्य' पत्र, मदनमोहन मालवीय का 'अभ्युदय' तिलक के केसरी का हिन्दी संस्ककरण 'हिन्दी केसरी, पं0 सुंदरलाल का 'कर्मयोगी', कृष्णकांत मालवीय का 'मर्यादा', गणेश शंकर विद्यार्थी का 'प्रताप', युवक और 'विशाल भारत; 'युगांतर', 'गदर', वंदेमातरम्, प्रभा आदि। इन पत्र–पत्रिकाओं ने स्वतत्रंता आंदोलन में अपना भरपूर योगदान दिया।

1920 ई0 के बाद पत्रकारिता पर गांधी के विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। अब पत्रकारिता की धारा राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर महात्मा गांधी के नेतृत्व में गतिमान राष्ट्रीय आंदोलन का समर्थन करने लगी। इस युग में गांधी जी ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से जन–जागरण, सत्याग्रह एवं अछूतोद्धार का कार्य प्रारंभ कर दिया। 'नवजीवन' और 'हरिजन' पत्र के माध्यम से गांधीजी ने तो एक नए युग और सामाजिक क्रांति का उद्घोष कर दिया था। गाँधी जी से प्रभावित होकर स्वराज की माँग को मुखर स्वर देने हेतु विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हुयी। जैसे– जबलपुर से 'कर्मवीर', आगरा से 'सुधाकर', लाहौर से 'ज्योति', सोहागपुर से हिन्दू, प्रयाग से ''हिन्दुस्तानी अखबार', कलकत्ता से 'क्षत्रिय मार्तण्ड', काशी से 'अहिंसा', 'आज', कानपुर से 'वर्तमान' और 'लोकमत', पटना से 'प्रजाबंधु' तथा 'देश' आदि पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हुयी।

गाँधीयुगीन पत्रिका लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत कर रहे थे। तत्कालीन पत्रकार के लिए देशभक्ति और साहित्य सेवा उनके जीवन की साधना थी। गाँधी के आदर्शों तथा सिद्धांतो से प्रेरित होकर अनके पत्र–पत्रिकाएँ छपने लगी, जिनमें कुछ प्रमुख हैं–'माधुरी', 'समन्वय', 'चांद', 'अर्जुन', 'मतवाला', 'सैनिक', 'कल्याण', 'सुधा', 'विशाल भारत; 'विश्वभारती', 'साहित्य संदेश', 'रूपाय', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रतीक', 'हंस', 'सरिता', नई दुनिया' आदि का प्रकाशन हुआ। इन सभी पत्रों के अतिरिक्त इस काल में अनके पत्रों का प्रकाशन हुआ। इस काल की सभी पत्र–पत्रिकाये, चाहे वो साहित्यिक हो, धामिर्क हो या राजनीतिक हो, सभी ने स्वतत्रं ता संग्राम में अपना अमूल्य योगदान दिया। 1921 के बाद गांधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन मध्यवर्ग तक सीमित न रहकर ग्रामीणों और श्रमिकों तक पहुँच गया और इस प्रसार में हिन्दी पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

निष्कर्ष–

भारतीय राष्ट्रवाद को जीवित रखने और विकसित करने में हिन्दी पत्रकारिता का बहुत बड़ा योगदान है। प्रारंभ से ही हिन्दी पत्रकारिता अपने ऊँचे आदर्शों का पालन करती आ रही है। सदा से ही राष्ट्रीयता उसका मुख्य

स्वर रहा है।[8] राष्ट्रीय सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए पत्रकारों ने अनेक कष्ट और यातनाएँ सही, किंतु वे अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए। स्वतंत्रता पूर्व की हिन्दी पत्रकारिता राष्ट्रीय आंदोलन को गति, शक्ति और दिशा प्रदान की।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. डॉ0 अवधेश कुमार, हिन्दी की साहित्य पत्रकारिता, पृ0–33
2. ओ0पी0 शर्मा, पत्रकारिता और उसके विभिन्न स्वरूप, पृ0–14
3. डॉ0 रत्नाकर पांडेय (संपादक), हिन्दी पत्रकारिता, पृ0– 104,105
4. अनिल सिन्हा, हिन्दी पत्रकारिता, इतिहास स्वरूप और सम्भावनाएं, पृ0– 18
5. अनिल सिन्हा, हिन्दी पत्रकारिता, इतिहास स्वरूप और सम्भावनाएँ, पृ0– 34
6. हिमांशु शेखर सिंह, हिन्दी पत्रकारिता और काशी, पृ0– 69
7. ओ0पी0 शर्मा, पत्रकारिता और उसके विभिन्न स्वरूप, पृ0–25
8. रूपम कुमारी, हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रवाद, नेहरा, ललित नारायण मिथिला, विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार